

डॉ. यार्लगड्डा लक्ष्मी प्रसाद

Dr. Yarlagadda Lakshmi Prasad



पद्म भूषण

Padma Bhushan



राष्ट्रपति से अलंकरण प्राप्त करते हुए

Receiving the decoration from the President

डॉ. यार्लगड्डा लक्ष्मी प्रसाद

डॉ. यार्लगड्डा लक्ष्मी प्रसाद हमारे देश की सर्वाधिक बोली जाने वाली हिन्दी और तेलगू भाषाओं की प्रसिद्ध साहित्यिक रचनाओं के पुरोधा अनुवादकों में से एक हैं। इस माध्यम से आपने देश की इन दो प्रमुख भाषा–भाषी लोगों के बीच व्यापक समझ एवं उनमें नई चेतना जागृत करने में सहायता की है। दक्षिण भारत में सफलतापूर्वक हिन्दी भाषा को बढ़ावा देने में आपके द्वारा किए गए योगदान की व्यापक सराहना हुई है।

2. आपका जन्म 24 नवम्बर, 1953 में हुआ था और आपने आंध्रा विश्वविद्यालय में प्रोफ़ेसर एवं हिन्दी विभाग के अध्यक्ष के रूप में कार्य किया। आप वर्ष 1996 से 2002 के दौरान राज्य सभा के सदस्य रहे। इस अवधि के दौरान आपको चार वर्षों के लिए संसदीय रा.भा. समिति का उपाध्यक्ष नियुक्त किया गया तथा इस पद पर रहते हुए आपने नीतिगत एवं क्रियान्वयन से जुड़े मामलों के संबंध में स्पष्टता लाने के लिए महत्वपूर्ण योगदान दिया। आपने छः वर्षों तक आंध्र प्रदेश हिन्दी अकादमी के अध्यक्ष पद पर कार्य किया। आपने राजभाषा संबंधी उच्चाधिकार प्राप्त समिति, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली के अध्यक्ष तथा केन्द्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के उपाध्यक्ष के रूप में भी कार्य किया है। आपने हिन्दी को बढ़ावा देने के उद्देश्य से विदेशों की गहन यात्राएं की तथा विगत तीन दशकों में सभी विश्व हिन्दी सम्मेलनों में भाग लिया। आप वर्ष 2012–13 में टोरंटो, कनाडा स्थित भारतीय संस्कृति केन्द्र के प्रथम निदेशक रहे हैं।

3. आप पारस्परिक सांस्कृतिक एवं भाषायी विनिमय के माध्यम से राष्ट्रीय एकता के अपेक्षित लक्ष्य की प्राप्ति में लोकप्रिय स्तर का महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। आप जिस कार्य में लगभग चार दशकों से रत हैं, उसमें आपने सारगर्भित सफलता प्राप्त की है। आपने यह सिद्ध कर दिखाया है कि विविध सामाजिक–सांस्कृतिक परिवेशों में निहित विभिन्न पहलुओं की समझ तथा विचारों के आदान–प्रदान से क्षेत्र तथा भाषा संबंधी बाधाओं को दूर किया जा सकता है।

4. हिन्दी तथा तेलुगू भाषा के सारगर्भित एवं सफल अनुवाद तथा दोनों भाषाओं में कुल 64 मूल लेखन कार्यों के माध्यम से हिन्दी व तेलुगू भाषा के साहित्यिक क्षेत्रों के क्षितिज को विस्तारित करने में आपके द्वारा किए गए महत्वपूर्ण योगदान के लिए आपको अनुवाद एवं सृजनात्मक लेखन के लिए दो बार प्रतिष्ठित केन्द्रीय साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

5. साहित्य के क्षेत्र में आपके विशिष्ट योगदान के लिए आपको वर्ष 2003 में पद्म श्री पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

Dr. Yarlagadda Lakshmi Prasad

Dr. Yarlagadda Lakshmi Prasad has been one of the pioneers in translating acclaimed literary works of Hindi and Telugu, the largest spoken languages of our country, into each other. Through this medium, Dr. Prasad has enabled the emergence of much larger understanding and a new consciousness, among those speaking these two major languages of the country. His contribution to the promotion of Hindi in Southern India with considerable success has been widely acknowledged.

2. Born on November 24, 1953, Dr. Laxmi Prasad served as Professor and Head of the Department of Hindi in Andhra University. He was a Member of the Rajya Sabha between 1996 and 2002. During this period, he was appointed the Deputy Chairman of the Parliamentary Committee on Official Language for four years and in this capacity he made significant contribution towards imparting clarity on matters of policy and implementation. He also served as Chairman, Andhra Pradesh Hindi Academy for six years. He was also the Chairman of the High Power Committee on Official Language, University Grants commission, New Delhi and Vice-Chairman, Central Hindi Institute, Agra. He also travelled overseas extensively promoting the cause of Hindi and attended all World Hindi Conferences over the last three decades. He was also the first Director of Indian cultural Centre, at Toronto, Canada during the years 2012-13.

3. Dr. Laxmi Prasad has been making yeomen contribution towards the much desired cause of national integration through cross cultural and linguistic exchanges at popular level. He has achieved considerable success on the path he has pursuing for about four decades now. He has proved that the barriers of region and language could be overcome through exchange of ideas and understanding of different perspectives, rooted in diverse socio-cultural settings.

4. For his significant contribution to expanding the horizons of the literary domains of Hindi and Telugu, through meaningful and well received translations and original works a total of sixty four, in both the languages, Dr. Lakshmi Prasad was felicitated with the prestigious Central Sahitya Academy Awards twice for translation and creative writing. His literary pursuits towards the cause of National Integration were well served by the rarity of possessing doctorate degrees both in Hindi and Telugu, which again goes to prove that Dr. Prasad had this missionary zeal of using the medium of literature for the larger cause of national integration, early in his life.

5. Dr. Lakshmi Prasad was honoured with Padma Shri in the year 2003 for his contributions to the domain of literature.